चार मूर्ख पंडित

एक स्थान पर चार ब्राह्मण रहते थे। चारो विद्याभ्यास के लिये कान्यकुब्ज गये। निरन्तर १२ वर्ष तक विद्या पढने के बाद वे सम्पूर्ण शास्त्रो के पारंगत विद्वान् हो गये, किन्तु व्यवहार-बुद्धि से चारों खाली थे। विद्याभ्यास के बाद चारों स्वदेश के लिये लौट पडे। कुछ देर चलने के बाद रास्ता दो ओर फटता था। किस मार्ग से जाना चाहिये इसका कोई भी निश्चय न करने पर वे वहीं बैठ गये। इसी समय वहां से एक मृत वैश्य बालक की अर्थी निकली।

अर्थी के साथ बहुत से महाजन भी थे। 'महाजन' नाम से उनमे से एक को कुछ याद आ गया। उसने पुस्तक के पन्ने पलटकर देखा तो लिखा था - "महाजनो येन गतः स पन्थाः"

अर्थात् जिस मार्ग से महाजन जाये, वही मार्ग है। पुस्तक मे लिखे को ब्रह्म-वाक्य मानने वाले चारो पंडित महाजनो के पीछे-पीछे श्मशान की ओर चल पडे।

थोडी दूर पर श्मशान मे उन्होने एक गधे को खडा हुआ देखा। गधे को देखते ही उन्हे शास्त्र की यह बात याद आ गई "राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः"- अर्थात् राजद्वार और श्मशान मे जो खडा हो, वह भाई होता है। फिर क्या था, चारो ने उस श्मशान मे खडे गधे को भाई बना लिया। कोई उसके गले से लिपट गया, तो कोई उसके पैर धोने लगा।

इतने मे एक ऊँट उधर से गुज़रा। उसे देखकर सब विचार मे पड गये कि यह कौन है। १२ वर्ष तक विद्यालय की चारदीवारी मे रहते हुए उन्हें पुस्तको के अतिरिक्त संसार की किसी वस्तु का ज्ञान नही था। ऊँट को वेग से भागते हुए देखकर उनमे से एक को पुस्तक मे लिखा यह वाक्य याद आ गया- "धर्मस्य त्वरिता गतिः"- अर्थात् धर्म की गति मे बडा वेग होता है। उन्हे निश्चय हो गया

कि वेग से जाने वाली यह वस्तु अवश्य धर्म है। उसी समय उनमे से एक को याद आया- "इष्टं धर्मेण योजयेत् " -- अर्थात् धर्म का संयोग इष्ट से करादे। उनकी समझ मे इष्ट बान्धव था गधा और ऊँट या धर्म; दोनो का संयोग कराना उन्होंने शास्त्रोक्त मान लिया। बस, खींचखांच कर उन्होने ऊँट के गले मे गधा बाँध दिया। वह गधा एक धोबी का था। उसे पता लगा तो वह भागा हुआ आया। उसे अपनी ओर आता देखकर चारो शास्त्र-पारंगत पंडित वहाँ से भाग खडे हुए।

थोडी दूर पर एक नदी थी। नदी मे पलाश का एक पत्ता तैरता हुआ आ रहा था। इसे देखते ही उनमे से एक को याद आ गया- "आगमिष्यति यत्पत्रं तदस्मांस्तारयिष्यति" अर्थात् जो पत्ता तैरता हुआ आयगा, वही हमारा उद्धार करेगा। उद्धार की इच्छा से वह मूर्ख पंडित पत्ते पर लेट गया। पत्ता पानी मे डूब गया तो वह भी डूबने लगा।

केवल उसकी शिक्षा पानी से बाहिर रह गई। इसी तरह बहते-बहते जब वह दूसरे मूर्ख पंडित के पास पहुँचा तो उसे एक और शास्त्रोक्त वाक्य याद आ गया- "सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्धं त्यजति पंडितः"-- अर्थात् सम्पूर्ण का नाश होते देखकर आधे को बचाले और आधे का त्याग कर दे। यह याद आते ही उसने बहते हुए पूरे आदमी का आधा भाग बचाने के लिये उसकी शिखा पकडकर गरदन काट दी । उसके हाथ मे केवल सिर का हिस्सा आ गया। देह पानी मे बह गई।

उन चार के अब तीन रह गये। गाँव पहुँचने पर तीनो को अलग-अलग घरो मे ठहराया गया। वहां उन्हे जब भोजन दिया गया तो एक ने सोमियो को यह कहकर छोड दिया -- "दीर्घसूत्री विनश्यति"- -अर्थात् दीर्घ तन्तु वाली वस्तु नष्ट हो जाती है। दूसरे को रोटियां दी गई तो उसे याद आ गया -- "अतिविस्तारविस्तीर्ण तद्भवेन्न चिरायुषम्" अर्थात् बहुत फैली हुई वस्तु आयु को घटाती है। तीसरे को छिद्र वाली वटिका दी गयी तो उसे याद आ गया- 'छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति'--

अर्थात् छिद्र वाली वस्तु मे बहुत अनर्थ होते है। परिणाम यह हुआ कि तीनो की जगहँसाई हुई और तीनो भूखे ही रहे।

सीख : व्यवहार-बुद्धि के बिना पंडित भी मूर्ख ही रहते है। व्यवहार बुद्धि एक ही होती है। सैंकडो बुद्धियाँ रखने वाला सदा डांवाडोल रहता है।

चार मूर्ख पंडित

एक स्थान पर चार ब्राह्मण रहते थे। चारों विद्याध्ययन के लिए कान्यकुब्ज गए। निरन्तर 12 वर्ष तक विद्या पढ़ने के बाद वे समस्त शास्त्रों के पारंगत विद्वान हो गए, किन्तु व्यवहार-बुद्धि से चारों खाली थे। विद्याध्ययन के बाद चारों स्वदेश के लिए लौट पड़े। कुछ देर चलने के बाद रास्ता दो ओर फटता था। किस मार्ग से जाना चाहिए, इसका कोई भी निश्चय न कर सकने पर वे वहीं बैठ गए। इसी समय वहाँ से एक मृत वैश्य बालक की अर्थी निकली।

अर्थी के साथ बहुत से महाजन भी थे। 'महाजन' नाम से उनमें से एक को कुछ याद आ गया। उसने पुस्तक के पन्ने पलटकर देखा तो लिखा था - "महाजन येन गतः स पन्थाः"

अर्थात् जिस मार्ग से महाजन जाएँ, वही मार्ग है। पुस्तक में लिखे को ब्रह्मवाक्य मानने वाले चारों पंडित महाजनों के पीछे-पीछे श्मशान की ओर चल पड़े।

थोड़ी दूर पर श्मशान में उन्होंने एक गधे को खड़ा हुआ देखा। गधे को देखते ही उन्हें शास्त्र की यह बात याद आ गई "राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः"- अर्थात् राजद्वार और श्मशान में जो खड़ा हो, वह हमारा बड़ा भाई होता है, चारों ने उस श्मशान में खड़े गधे को भाई बना लिया। कोई उसके गले से लिपट गया, तो कोई उसके पैर धोने लगा।

इतने में एक ऊँट उधर से गुजरा। उसे देखकर सब विचार में पड़ गए कि यह कौन है? 12 वर्ष तक विद्यालय की चारदीवारी में रहते हुए उन्हें पुस्तकों के अतिरिक्त संसार की किसी वस्तु का ज्ञान नहीं था। ऊँट को वेग से भागते हुए देखकर उनमें से एक को पुस्तक में लिखा यह वाक्य याद आ गया- "धर्मस्य त्वरिता गतिः"- अर्थात् धर्म की गति में बड़ा वेग होता है। उन्हें निश्चय हो गया कि वेग से चलने वाली यह वस्तु अवश्य धर्म है। उसी समय उनमें से एक को याद आया- "इष्टं धर्मेण योजयेत्" -- अर्थात् धर्म का संयोग इष्ट से कराएँ। उनकी समझ में इष्ट बान्धव था गधा और ऊँट था धर्म। दोनों का संयोग कराना उन्होंने शास्त्रोक्त मान लिया। बस, खींचखाँच कर उन्होंने ऊँट के गले में गधा बाँध दिया। वह गधा एक धोबी का था। उसे पता लगा तो वह भागा हुआ आया। उसे अपनी ओर आता देखकर चारों शास्त्र-पारंगत पंडित वहाँ से भाग खड़े हुए।

थोड़ी दूर पर एक नदी थी। नदी में पलाश का एक पत्ता तैरता हुआ आ रहा था। इसे देखते ही उनमें से एक को याद आ गया- "आगमिष्यति यत्पत्रं तदस्मांस्तारयिष्यति" अर्थात् जो पत्ता तैरता हुआ आएगा, वही हमारा उद्धार करेगा। उद्धार की इच्छा से वह मूर्ख पंडित पत्ते पर लेट गया। पत्ता पानी में डूब गया तो वह भी डूबने लगा।

केवल उसकी शिखा पानी से बाहर रह गई। इसी तरह बहते-बहते जब वह दूसरे मूर्ख पंडित के पास पहुँचा तो उसे एक और शास्त्रोक्त वाक्य याद आ गया- "सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्धं त्यजति पंडितः"-- अर्थात् सबका नाश होते देखकर आधे को बचाओ और आधे का त्याग कर दो। यह याद आते ही उसने बहते हुए पूरे आदमी का आधा भाग बचाने के लिए उसकी शिखा पकड़कर गर्दन काट दी। उसके हाथ में केवल सिर का हिस्सा आ गया। देह पानी में बह गई।

उन ग्यार कमेरा तीन रह गये। गार्वे पहाड़ीन पेर तीन के मैलग-मलग भर भिठहराया गया। वहां उन्होंने हटैन दिया गया उ ेक न भेभिय के येह कहकर कहें दिया -- "दीगभ्री विनमति"- - मह्यात् दीगङुन्वाली वभुनधरू ेती हा दिभ्रार के रेिया दी गर्ं उ ेउभ याद मु गया -- "मतिविभ्दुर विभीतु उम्बने निरायधभा" मह्यात् गहतु दली हर्ं वभुमुय्क िएती हा तीभर के किद् वाली वटिका दी गयी उ ेउभ याद मु गया- 'किद्येव्रुया गहली हवनि-- मह्यात् किद् वाली वभुभगेहतु मनतु हतेहा पेरिल्भ यह हमु कि तीन की एगहभार हर्ं ोर तीन हेप्ए ही रहा

भीप : वब्रुहार-गम्पिक गिना पहित ही भात्र ही रहतेहा वब्रुहार गम्पिगक ही हती हा भेकेह गम्पिर्गा रापन वेला भद हवंहलै रहता हा

मनवाद - विम्ह् कौल एला